NJESR/June2022/Volume-4/Issue-6 **E-ISSN-2582-5836**
DOI-10.53571/NJESR.2022.4.6.20-24

रेड़ियो नाटक के विकास में विष्णु प्रभाकर का योगदान

डॉ० अंजु देशवाल
सहायक प्राध्यापक
श्री एल०एन० हिन्दू कॉलेज, रोहतक
मोबाइल नं० 9466723448

Email : anjudeshwal1974@gmail.com

(Received:22May2022/Revised:1June2022/Accepted:15June2022/Published:22June 2022)

हिन्दी जगत में श्री विष्णु प्रभाकर की ख्याति मुख्यतः कहानीकार, एकांकीकार और जीवनी लेखक के रूप में है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी विष्णु प्रभाकर जी के बहुआयामी कर्त्तव्य के कारण साहित्य प्रेमी इस दुविधा में हैं कि उन्हें किस विधा का सिद्धहस्त कलाकार माना जाए। यद्यपि उन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, रेड़ियोरूपक, जीवन चरित, निबन्ध, बाल–साहित्य सभी कुछ लिखा है। विष्णु जी के एकांकी नाटक रेडियो से चिरकाल तक प्रसारित होते रहे। उनके श्रोताओं ने उन्हें एकांकीकार के रूप में स्वीकार कर लिया। डॉ० विजयेन्द्र स्नातक ने भी इस दुविधा को अंकित करते हुए लिखा है – ''ज्यों–ज्यों पथ प्रशस्त होता गया, साहित्य की अन्य विधाएँ भी उनके रचना संसार में समाविष्ट होती गई और आज कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, रेखाचित्र, संस्मरण, निबन्ध, यात्रावृत्त, बाल–साहित्य आदि विधाओं में उनका प्रदेय लक्षित किया जा सकता है। मैं उन्हें कहानीकार मानता हूँ किन्तु विष्णु जी का जो रूप विद्यालयों में पाठ्य–पुस्तकों के माध्यम से सर्वाधिक विदित है, वह नाट्य विधा का है। उन्होंने नाटककार के रूप में ख्याति अर्जित की है।''[1]

युग बदलता है, युग के बदलने से अभिव्यक्ति के माध्यम बदलते हैं व माध्यम के बदलने से साहित्य का स्वरूप बदलता है। युग के परिवर्तन के साथ रेड़ियो का आविष्कार हुआ और उसने नाटक को दृश्य काव्य से श्रव्य काव्य बना दिया। पहले नाट्य प्रेमी नाटक के पास आते थे आज नाटक स्वयं उनके पास पहुँच गया।

हिन्दी में रेडियो नाटक को प्रारम्भ हुए बहुत दिन नहीं हुए। पहला नाटक 1936 में आल इण्डिया रेडियो से प्रसारित किया गया था। आजादी के समय तक इस क्षेत्र में अनेक प्रयासों के

[1] विष्णु प्रभाकर : व्यक्ति और साहित्य सम्पादक डॉ० महीप सिंह, पृ० 13

उपरान्त भी क्षेत्र पर्याप्त सफलता हासिल नहीं हुई। आगे चलकर उपेन्द्रनाथ अश्क, जगदीशचन्द्र माथुर, उदय शंकर भट्ट, रामकुमार वर्मा, विष्णु प्रभाकर, कृष्ण चन्द्र मन्टो, राजेन्द्र सिंह बेदी जैसे नाटककारों के प्रयास से यह क्षेत्र विकसित हुआ।

विष्णु प्रभाकर उन लेखकों में से है, जिन्होंने रेडियो की प्रेरणा से नाट्य–लेखन प्रारम्भ किया था। इन्होंने रेडियो–नाटक के स्वतन्त्र अस्तित्व स्वीकार करते हुए स्वयं लिखा है – ''सच तो यह है कि अभी तक मैंने रेडियो के लिए ही लिखा है। उनमें से कई एकांकी रंगमंच पर आये हैं और उन्होंने मेरे इस विश्वास को दृढ़ किया है कि रंगमंच और रेडियो कला की दृष्टि से बिल्कुल दो चीजें हैं।[2] विष्णु प्रभाकर ने प्रारम्भ में अपने नाटक केवल रेडियो के लिए लिखे, पर बाद में कुछ नाटकों में एक साथ ही रंगमंच व रेडियो के लिए लिखने की प्रवृत्ति मिलती है। विष्णु जी शुरूआती दौर में प्रयोगशील रेडियो नाटककार रहे हैं। उन्होंने इस क्षेत्र में अनेक प्रयोग किए हैं। इन्होंने रेडियो रूपक, रेडियो रूपान्तर आदि सभी प्रकार की रचनाओं में अपनी कुशलता का परिचय दिया है।

विष्णु प्रभाकर जी के रेडियो नाटकों के अनेक संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं, जिनमें से कुछ केवल श्रव्य संकेतों के साथ हैं व कुछ एक के साथ दृश्य संकेतों का विधान भी है। पर यहाँ हम उनके रेडियो नाटक के सन्दर्भ में ही विचार करेंगे। उनके मुख्य नाटकों के नाम इस प्रकार है – 'दो किनारे', 'युग सन्धि', 'प्रकाश और परछाई', 'समरेखा', 'मीना कहाँ है', 'क्या वह दोसी था', 'विषय रेखा', 'सेवरा', 'सांप और सीढ़ी', 'संस्कार और भावना', 'जहाँ दया पाप है', 'उपचेतना का छल', 'वीरपूजा', 'दरिन्दा', 'दस बजे रात', 'अशोक', 'पूर्णाहूति' आदि।

विष्णु प्रभाकर मानववादी रचनाकार है। यथार्थ को आधार बनाकर उन्होंने आदर्शों की उड़ान भरी है। विषय की दृष्टि से इनके नाटकों में विविधता देखने को मिलती है। इन्होंने ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक आदि सब प्रकार के कथानकों पर नाटक रचना की है, किन्तु सबके मूल में मनोवैज्ञानिकता का आभास होता है। उन्होंने स्वयं माना है कि मनोवैज्ञानिक नाटक लिखने में इनकी विशेष रूचि है।

इनके पात्रों में मुख्यतः जटिलता का रूप देखने को मिलता है। इन्होंने अपने पात्रों का चरित्र–चित्रण मनोवैज्ञानिक आधार पर उभारने का यत्न किया है व इसी सन्दर्भ में उन्होंने स्पष्ट किया है कि मनुष्य ऊपर से जैसा दिखाई देता है, वास्तव में वैसा नहीं होता। बाह्य व्यवहार उसके

[2] कुमार सिद्धनाथ, हिन्दी एकांकी की शिल्पविधि का विकास, पृ० 301, प्र० ग्रन्थम रामबाग, कानपुर प्रकाशन काल : जुलाई 1966

वास्तविक रूप का, चरित्र का परिचायक नहीं होता। प्रभाकर जी ने उसमें इसी स्वरूप को हटाकर वास्तविक चरित्र को दिखाने का प्रयत्न किया है। मानव का यह रूप उनके नजरिए से बड़ा कोमल, भावप्रवण व संवेदनशील है। वास्तव में यही वह मानवीय धरातल है। वास्तव में यही वह मानवीय धरातल है जिसकी झलक उनके नाटकों में दिखाई देती है। 'संस्कार और भावना' की बूढ़ी माँ ऊपर से कठोर दिखती है, संस्कार व कुल मर्यादा को वात्सल्य से ऊपर रखती है, किन्तु उनका हृदय वात्सल्य इस से भरा होता है।

विष्णु प्रभाकर ने पात्रों के मन में कोई न कोई द्वन्द्व को दर्शाने की चेष्टा की है, जिससे ये स्थिर न रहकर गतिशील पात्र के रूप में उभरकर सामने आते हैं। कम समय में भी ये अपने कई पहलुओं को हमारे सामने गहराई के साथ प्रस्तत कर जाते हैं। एक मानसिक स्थिति से दूसरी मानसिक स्थिति तक इनकी गतिशीलता बनी रहती है, जो कि इनके नाटकों का विशेष आकर्षण है। 'मीना कहाँ है?', नाटक में नरेश अपनी पाली हुई पुत्री को प्यार भी करता है और आवेश में उसकी हत्या भी कर देता है। ऐसे ही 'पैसा' में रेखा अपने परिवार को पालना भी चाहती है और स्वतंत्र हो अपना विवाह भी करना चाहती है। 'दस बजे रात' में सुधीन मानसिक अवस्थता से स्वस्थता की ओर आता है। 'अशोक' में अशोक हिंसा से अहिंसा की ओर आता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रभाकर जी के नाटक चरित्र–प्रधान नाटक है और उनका चित्रण मनोवैज्ञानिकता के आधार पर किया गया है।

इस मनोवैज्ञानिकता के प्रभाव से विष्णु प्रभाकर जी का नाट्य शिल्प भी अछूता नहीं रह सका। उनके नाटक जीवन के विस्तार में न जाकर उसकी गहराई में प्रवेश करते हैं। वे समय की दीर्घता पर नहीं, क्षण विशेष की तीव्रता पर केन्द्रित होते हैं और रेडियो नाटक इसका सबसे उपयुक्त माध्यम है। इसके अदृश्य माध्यम में मन की गहराईयों में उतरने की विशेष क्षमता है। इससे भावनाओं का सघनता और तीव्रता को सरलता से दर्शाया जा सकता है। इसके लिए स्वगत कथन, राग–विराग पात्रों को भी आधार बनाया जाता है। विष्णु प्रभाकर जी ने रेड़ियो नाटक के सन्दर्भ में घटनाओं को संक्षिप्त रूप देते हुए उन्हीं को लिया है जो चरित्रांकन के लिए अनिवार्य है। उनके सभी नाटक मार्मिक क्षण विशेष पर आधारित है। इसके लिए उनके नाटकों में कहीं बिखराव दिखाई नहीं देता। नाटक आरम्भ होने के कुछ क्षणों बाद ही वे मूल समस्या का उद्घाटन कर श्रोताओं में उत्सुकता जगा देते हैं। उसके बाद घटनाओं का प्रवाह इस प्रकार बहता है कि नाटक की रोचकता बनी रहती है और अन्त में आकस्मिक मोड़ लेकर नाटक चरम सीमा पर पहुँच की समाप्त हो जाता है। यहाँ मन को झटका–सा लगता है, जिससे बुद्धि चमत्कृत व हृदय द्रवित हो

उठता है। उनके द्वारा उत्पन्न की गई आकस्मिकता कहीं भी अस्वाभाविक नहीं लगती, क्योंकि उसके लिए मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि पहले ही निर्मित होती है। यह बात 'अशोक', 'पूर्णाहूति', 'उपचेतना का दल', 'मुरब्बी', 'युग–सन्धि', आदि अनेक नाटकों में देखी जा सकती है।

प्रभाकर जी के नाटकों के प्रस्तुतीकरण को लेकर भी काफी विविधताएँ देखने को मिलती हैं। उनके नाटक संलाप, गीत, स्वगत कथन आदि से प्रारम्भ होते हैं। उनके नाटकों में बीच–बीच में फ्लैश बैक का भी प्रावधान है। मनोवैज्ञानिक नाटकों में अतीत के व्याख्यान की शैली को भी अपनाया गया है। ध्वनि प्रभाव को लेकर प्रभाकर जी अत्यन्त सजग थे। 'मुरब्बी' नाटक के प्रारम्भ में बाजार का दृश्य प्रस्तुत करने के लिए उन्होंने विभिन्न ध्वनियों व स्वरों का प्रयोग किया था। 'दस बजे रात' में ट्रेन के ध्वनि प्रभाव की पृष्ठभूमि पर पात्रों की बातचीत द्वारा चलती हुई ट्रेन का आभास दिया गया है। तीव्र भावात्मक स्थलों पर संगीत का सहारा लिया गया है। रेड़ियो नाटक की दृष्टि से उनके मनोवैज्ञानिक नाटक अत्यन्त प्रभावशाली बन पड़े हैं।

विष्णु प्रभाकर जी ने रेड़ियो स्वगत नाट्य का लेखन भी किया है जो अत्यन्त दुष्कर कार्य है। प्रारम्भ से अन्त तक एक ही पात्र बोलता रहे और उसमें नाटकीयता, रोचकता बनी रहे, श्रोता बँधे रहे, इसके लिए बड़ी सतर्कता व कुशलता की अपेक्षा होती है। उन्होंने चार स्वगतनाट्य लिखे हैं – 'सड़क', 'धुँआ', 'नए–पुराने', 'नहीं, नहीं, नहीं'। इनके पात्र अर्न्तद्वन्द्व से ग्रस्त है, संघर्ष की स्थितियाँ इसको आगे बढ़ाती है। ये नाटक क्षण–विशेष की तीव्रता पर केन्द्रित होते हैं। इसमें भावों की तीव्रता, बोलने की गति का ध्वनि प्रभाव व शान्ति का प्रयोग कर इसे आकर्षक बनाया गया है। इनके लेखन में प्रभाकर जी की भाषण बड़ी सशक्त व भावों के अनुरूप है।

विष्णु प्रभाकर जी ने रेड़ियो रूपकों की भी रचना कर अपनी विविधता का परिचय दिया है। रूपक के माध्यम से उन्होंने अनेक विषयों को कलात्मक रूप देकर प्रस्तुत किया है। कुछ सफल रूपकों के नाम इस प्रकार हैं – 'सर्वोदय', 'हमारा स्वाधीनता संग्राम', 'छः भाग', 'नया काश्मीर', 'पंचायत' आदि रूपक का उद्देश्य सूचना देना होता है, इसे साहित्य के रूप में प्रस्तुत करना एक दुष्कर कार्य है। परन्तु प्रभाकर जी इसे मानवीय धरातल पर प्रस्तुत कर इसकी रोचकता को बनाए रखकर अपनी कुशलता का परिचय दिया है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि हिन्दी के रेड़ियो नाट्य साहित्य को विष्णु प्रभाकर की देन बहुत बड़ी है। उनके सफल प्रयोगों के लिए ही आज रेड़ियो नाट्य साहित्य उनके नाम के बिना अधूरा है। प्रभाकर जी के नाटकों में कथानक निर्माण, चरित्र–चित्रण, संवाद, ध्वनि प्रयोग आदि

सभी क्षेत्रों में कुशलता बरती गई, जिसके कारण उनके नाटक, रेड़ियो नाटक के भावी विकास का दिशा–निर्देश कर सकने में सफल रहे।